

Reprinted M.by Ram Naravan at the Hira Lal Printing Works Aligarh

ALIGARH, U. P.

अध्यापकों के लिए आवश्यक सङ्गेत।

इस 'हाई क्ष कापी' में जितनी शहें दी गई हैं वे सब इस ढङ्ग पर रक्खी गई हैं कि पहले सरल, फिर क्रय-क्रम से कठिन होती गई हैं। इसके अतिरिक्त और भी शहुँ हैं जो अभ्यास करने के लिए आवश्यक हैं; क्यों कि कैवल इन शहुँ के बना लेने ही से डाइड्स का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता; इसलिए अध्यापकों को उचित है शहुँ हो जो अभ्यास करने के लिए आवश्यक हैं; क्यों कि कैवल इन शहुँ के बना लेने ही से डाइड्स का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता; इसलिए अध्यापकों को उचित है कि इस पुस्तक में दिये हुए चित्रों को परिवर्तन कर; छोटे तथा बड़े चित्र भी विद्यार्थियों से बनवाया करें। छुद अभ्यास होजाने पर प्रतिदिन की देखी हुई वस्तुओं को कि इस पुस्तक में दिये हुए चित्रों को परिवर्तन कर; छोटे तथा बड़े चित्र भी विद्यार्थियों से बनवाया करें। छुद अभ्यास होजाने पर प्रतिदिन की देखी हुई वस्तुओं को खिचवाना अधिक लाभदायक होगा। प्रथम नवीन सोखने बालों को खड़ी, आड़ी एवं तिरख़ी लाइनों के खींचने में कठिनता प्रतित होती है; इसलिए उनसे बिना स्केल की परित यानी हकेल के द्वारा (जो बाज़ार में बिलते हैं) चित्र खिचवाये जायें। ऐसा करने से थोड़े ही समय में उनको अभ्यास हो जायगा; पश्चान उनसे बिना स्केल की सहायता के चित्र खिचवाये जावें।

लाइनें श्विचवाने के नियम — प्रत्येक चित्र बहुतसी लाइनों से मिलकर बनता है और वह कई प्रकार का होता है। कोई खड़ा; कोई तिरछ ; और कोई पड़ा होता है। इनमें से पड़ी लकीर वाई तरफ से दाहिनी तरफ; और खड़ी लकीर ऊपर से नीचे की और; इसी प्रकार तिरछी लकीर यदि अधिक भुकी हों तो कोई पड़ा होता है। इनमें से पड़ी लकीर वाई तरफ से दाहिनी तरफ; और खड़ी लकीर ऊपर से नीचे की और खड़ी लकीर ऊपर से नीचे की और खड़िनी लाई और से; और यदि कम भुकी हों तो ऊपर से नीचे की और खिचवाना चाहिए। काम प्रायः वाई और से आरम्भ कराके दाहिनी और समाप्त कराना चाहिए। इसके विरुद्ध करने पर यदि काम दाहिनी और वाई और एकसा हो तो हाथ से दाहिनी और का भाग छिप जावेगा और उसके बनाने में अधिक क टिनता होगी।

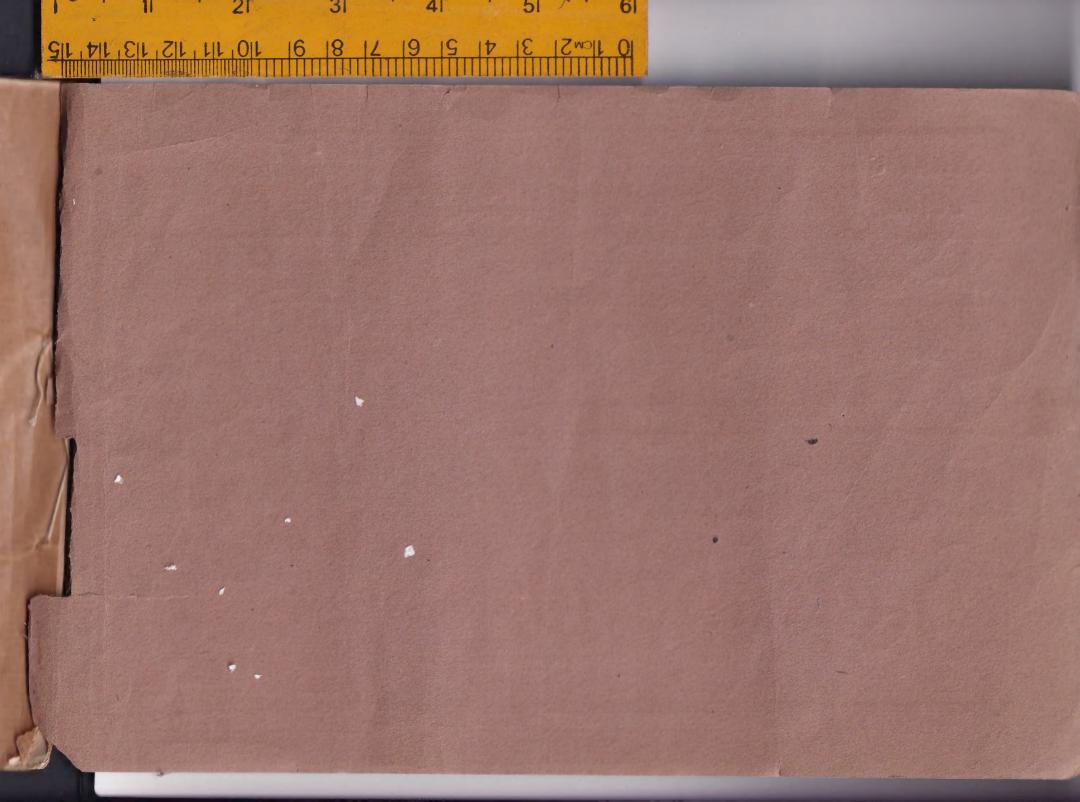
काराज, पंसिल आदि का प्रयोग—गोलाई लिये हुए लकीर खोंचने में हाथ इस तरह कुकार्व कि मुट्टी सहज में वृस सके। मुट्टी के नीचे कार्य वा रूमाल सफाई के लिए रखना चाहिए। स्केच (Sketch) को पहले अन्छो तरह समम लेना चाहिए कि चित्र में कितने टुकड़े हैं और उनके कितने हिस्से कार्य वा रूमाल सफाई के लिए रखना चाहिए। स्केच (Sketch) को पहले अन्छो तरह समम लेना चाहिए कि चित्र में कितने टुकड़े हैं और उनके कितने हिस्से हैं, फिर धीरे-धीरे हलकी पेंसिल की लाइनों से उस चित्र की सादी नक़ल बनाकर उसे रबर से हलका कर देना चाहिए और ग़लत लाइनों को बिलकुल मिटा देना चाहिए। हलकी लाइनों पर सावधानी के साथ सुन्दरता का पूरा घ्यान रखते हुए चित्र को पूरा करना चाहिए; परन्तु हाथ को इतना हलका रखें कि काग़ज़ ज़रा चाहिए। हलकी लाइनों पर सावधानी के साथ सुन्दरता का पूरा घ्यान रखते हुए चित्र को पूरा करना चाहिए; परन्तु हाथ को इतना हलका रखें कि काग़ज़ ज़रा मी ख़राव न होने पावे और लाइनों की सोटाई एकसी रहे। जिस-जिस शक्त में जितनी दुकतेदार लकीर हैं वे सब शक्त बनाने में आसानी पेदा करने के लिए रखी गई है। ख़तः शक्त बनाने के पश्चात् उन्हों मिटा देना चाहिए।

र्यर और पेंसिल — जो रवर डाइड्स के काम में लाया जाय वह मुलायम और अञ्छा हो। 'ज़ीन फ़ेवर' या 'ए० डवल्यू फ़ेवर' का रवर इस काम के लिए उपयोगी है। काम करते समय हाथ में रवर नहीं रखना चाहिए। काम में लाने से पूर्व उसे किसी काग्रज़ या कपड़े से रगड़कर साफ करलेना चाहिए। एडले सही लकीरें बना लेकें, फिर ग़लत लकीरों को रवर से मिटाकर विलक्कल साफ करदेवें। बहुधा छोटे लड़के रवर काम में लाते समय काग्रज़ को धिसकर ख़राव पहले सही लकीरें बना लेकें, फिर ग़लत लकीरों को रवर से मिटाकर विलक्कल साफ करदेवें। बहुधा छोटे लड़के रवर काम में लाते समय काग्रज़ को धिसकर ख़राव पहले सही लकीरें बना लेकें, फिर ग़लत लकीरों को रवर स्वयं काम में लाकर बतलादें पेंसिल न ज़यादा मुलायम हो न ज़यादा सख्त। एव० बीठ कर देते हैं, इसिलए अध्यापकों को चाहिए कि वे लड़कों को रवर स्वयं काम में लाकर बतलादें पेंसिल न ज़यादा मुलायम हो न ज़यादा सख्त। एव० बीठ साम में सि. B.) पेंसिल इस काम के लिए बहुत अञ्छी है, लेकिन यह भी कई कारख़ानों की बनी हुई होती हैं, इसिलए 'ए० डवल्यू फ़ेबर' या 'जीन फ़ेबर' ही इस काम में लानी चाहिए। ऐंसिल ऐसी नाप से काटनी चाहिए कि कम से कम लानी चाहिए। इसको धीरे से अँगूठे और आगे वाली अंगुली के अगले हिस्से पर रखकर काम लेना चाहिए। पेंसिल ऐसी नाप से काटनी चाहिए कि कम से कम लानी चाहिए। विलक्त को कम बही। अगर छोटी हो जावे तो एक इझ ज़हर कट जाय; किन्तु इसकी नोक इतनी बाशिक न हो कि काग्रज़ में छेद हो जावे। पेंसिल की लम्बाई ४, ४ इझ से कम न हो। अगर छोटी हो जावे तो उसकी किसी नरकल या किसी और चीज़ में लगाकर लम्बी कर लेनी चाहिए ताकि काम करने में आसानी हो।

बैठन का ढड़- कापी या कागृज़ मेज़ पर इस तरह रखी जावे कि उसके किनारे मेज़ के किनारों के समानान्तर (Parallel) रहें और मेज़ के अगले किनारे से इतनी उठी रहे कि कुहनी वग्रेरह से टक न जाय। कई दिशाओं में लकीर खींचते समय कापी या कागृज़ को उपर-नीचे या दाये-वायें न करें। केवल हाथ, किनारे से इतनी उठी रहे कि कुहनी वग्रेरह से टक न जाय। कई दिशाओं में लकीर खींचते समय कापी या कागृज़ को उपर-नीचे या दाये-वायें न करें। केवल हाथ, किनारे से इतनी उठी रहे कि कुहनी वग्रेरह से टक न जाय। कई दिशाओं में लकीर खींचते समय कापी या कागृज़ को उपर-नीचे या दाये वालें। मेज़ किसी कदर सलामी लिये हुए होनी चाहिए। स्टूल मुख़्तिलाफ उध के वालकों के लिए मुख़्तिलाफ उँ कहा न चींचाहिए।

बालकों को यह भी हिदायत करना ज़रूरी है कि वे अपना मुँह मेज़ की ओर रक्ते। शरीर एक आरे अका न रहे। चेहरा आगे की और कुछ भुका रहे किन्तु इतना नहीं कि आँखें काग्रज़ या कापी के समीप हो जावें। पाँव फर्श पर बराबर टिके रहें जिससे बाज़ इटाने में रकावट न हो।

0 1cm2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15



PREFACE.

There are various Indian series which deal with Freehand Drawing, but they either generally lack a graded arrangement of forms and figures, or include such figures as are at once small in size and proportion.

The author, having experience, extending over several years, in teaching various phases of drawing, felt the necessity of placing before the public a series containing a lucid and graded arrangement of forms of objects, natural and artificial and common to every eye.

These series, therefore, would serve the purpose of a useful and intelligent guide to a proper understanding of the subject-matter of Drawing to the teachers as well as to the taught.

Useful hints and instructions are given in each series for the method of work treated therein.

MAHARAJA'S HIGH SCHOOL, JAIPUR.

B. L. SHARMA.

Printed by M. Ram Narayan at the "Hira I al Printing Works", Aligarh.

HINTS AND INSTRUCTIONS.

Position of the body.

In starting the work of every class great attention should be paid by the teacher to see how the pupils set about their work. They must be made to sit straight with their shoulders parallel to the desk. The right-hand should be supported by the wrist and little finger and the pencil should be held such as a pen in writing but rather more upright and freely but firmly between the thumb and the first and second fingers.

Pencil, rubber, etc.

For work on paper a lead pencil of good quality is necessary. For the elementary studies, HB or F are mostly used; good pencils are more economical than cheap ones, and the work produced by them is of better quality. The pencil should be cut with a long fine point. Good rubber is essential and that for general use should be fairly soft and clean. It should not be kept in the hand, as a certain amount of moisture through perspiration will go to spoil the work.

Mechanical instruments.

The use of mechanical instruments should be avoided. Each example in this book should be copied without their assistance. The work of measurements should be done by the eye alone. It is a waste of time to do by mechanical means what is intended as an exercise to train the eye and the hand.

Method of work.

While drawing freehand and symmetrical subjects, always keep it a point to begin at the top and draw the upper portion of the left side first. This will be clear when actually drawing; for, if you begin at the right-hand side or the bottom of the drawing, your hand will cover up the work as you proceed, smear it, and thus the freshness of the drawing will be destroyed.

All sketch work should be done lightly and carefully. Use as few lines as possible and never draw a lot of random lines without thought and meaning.

Use of rubber.

When the sketch is complete, always clear the drawing with a light touch of India rubber, removing lines used in construction and then "line in" clearly with a firm line.

General outline and form.

In case of such advanced subjects as Animals, Birds, etc., etc., the students should first indicate the general outline of the subject to be copied. This may easily be done by marking off with light strokes the proportions upon the paper. Then he should proceed to draw the general form without paying attention to details which should follow, when the size and the relative portions of the parts have been settled.

WATER COLOUR.

Educational value.

The study and use of water colour is undoubtedly of great educational value. The love of colour is one of the greatest universal gifts of Nature. On water colour in schools, Mr. Joseph Vanghan, the late Director of Art and Manual Instruction to G. E. A. thus wrote, "The brush is not, in my experience, more difficult to handle than the crayon or pastel, and its employment develops very delicate and deft manipulation. It should thus be placed in the hands of the children as early as possible."

Paper and brush.

To ensure success in this work it is absolutely necessary to have good reliable materials—paper and brush. The paper should be stout and of a slight rough surface. Very thin and glazed papers are quite useless. Good and durable brushes are essential. Brushes, made of good squirrel hair, are found to be most dependable and durable.

Colours.

It is no less important to have some knowledge of paints themselves and the colours which result from mixing them. There are three Preliminary colours—red, blue, and yellow, and the Secondary colours are green, purple (or violet), and orange. These compound or secondary colours vary in hue according to proportions of the simple colours they contain. The chart of colour-mixing will be found in my Drawing Series (Book No. 4 and 5).

Preparation of tints.

Before actual painting, it is essential to prepare the tints upon a white palette; to do this, all that is required will be a brush and a glass of clear water. Before preparing them, the colours must be carefully compared with those of the picture to be copied.

Smooth and even colour.

To lay on a smooth even wash of colour, the paper should first be damped with clear water applied with the brush. Put on plenty of water and blot it off with a clean pad of white blotting paper, so that the paper is damp and not wet.

Method of work.

Begin at the top of the picture and colour downwards and do not let the colours settle in little patches; hard edges may be removed by clear water and blotting paper. Keep your brushes clean when not in use, as they do not last long if laid aside carelessly without being washed.

PASTEL DRAWING.

Paper.

For pastel drawing smooth paper is quite useless. The paper used for this kind of work should bear a distinct grain, but not too coarse. It should have a decided bite. Experience shows that

وروا المالية

Reeves' Greyhound Pastel papers are the most suitable and cheaper in price. So far as possible, papers of blue, green, and red colours should be avoided.

How to handle pastels.

As a rule, pastel should be held between the thumb and the first two fingers and worked to a sort of chisel edge capable of making a fine line, or a very broad one. When a large surface is to be covered, pupils should use the side of the pastel, or rub small broken pieces over the paper.

Use of charcoal.

For preliminary or experimental outlines, it is convenient and advantageous as well to use charcoal, for it can easily be dusted off the paper, leaving no marks upon the paper. The use of lead pencil and India rubber should be avoided.

How to apply pastels.

To preserve brightness and purity of colour, direct application of pastel is necessary. The habit of rubbing with the stump or finger should be given up. In case of advanced pupils, they may occasionally, not often, be allowed to use the finger to blend or soften the colours.

Several colours.

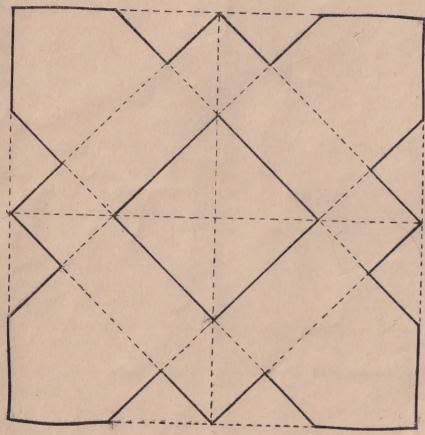
When it is desired to use several colours the lighter should be first applied, and the darker superimposed, the fore-finger or the little finger being lightly used to mingle the two so as to give the colour required. Care must be taken not to rub too much, as the surface tends to become greasy, rendering further work impossible.

Protection of drawings.

It is often seen that the copies of pupils do not bear tissue papers to cover the drawings. This leads to the rubbing of the papers which become smeared and thus the freshness and brilliancy of the drawings are destroyed. With a view to protect finished drawings, it is advisable that pupils should have tissue papers between them, and in exceptional circumstances, for further protection, a fixative may be used, but in this case the colour is likely to lose some of its brilliancy and freshness.

B. L. SHARMA.

पहले नुकतेदार चौकोर कोठा बनात्रो फिर बीच की लाइनें खींचकर नुकतेदार लाइनों की मदद से शक्त पूरी करो। سیلے نقطہ دارجو کورکو مطابنا ؤ۔ بھر بیج کی اُنٹین کینچ کر نقطہ دار لا مُوں کی مددسے شکل بوری کرو۔



II

ьу

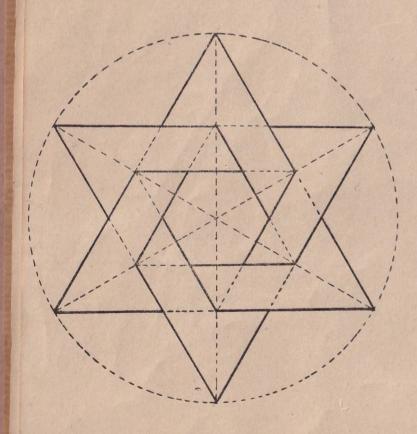
er

sy,

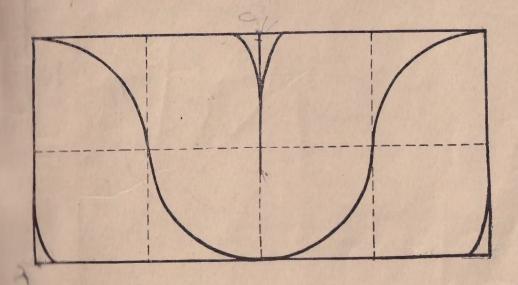
ngs.
y of
ould
may

पहले एक गोल दायरा बनाओं फिर छः हिस्सों में बाँटो, और नुक़तेदार लाइनों की मदद से शक्क पूरी करो।

سط ایک گول دائره بنا و پر جیج حصول میں با نتوا ور نقطه دارالائنوں کی مدد سے مسل بوری کرو-

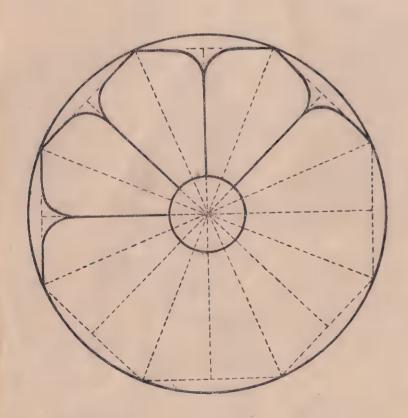


एक लम्बा चौकोर कोठा खींचो, फिर चार व दो बराबर हिस्सों में बाँटकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से शक़ को पूरी करो परन्तु गोलाई हाथ से बनात्रो। ایک لمباج کورکو شاکینیو - برجار و دو برابر حصتوں میں بانٹ کرنقطه دارلائوں کی مدد سے شکل بوری کرو مگرگولائی ہاتھ سے بناؤ۔



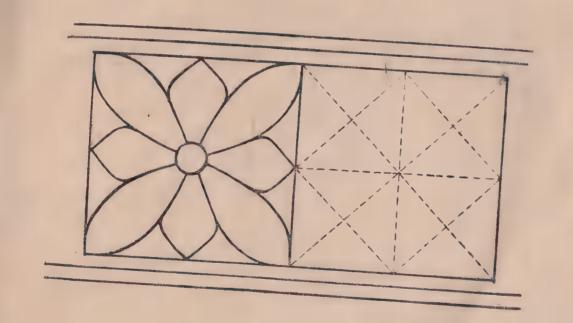
एक गोला बनाकर सोलह हिस्सों में बाँटकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से फूल की गोलाई हाथ से बनाकर शक्क पूरी करो।

ایک گولا بنا کرسٹولہ حصوں میں بانٹ کرنقطہ دارلائنوں کی مدد سے بھول کی گولائی ہاتھ سے بناکرشکل بوری کرو۔

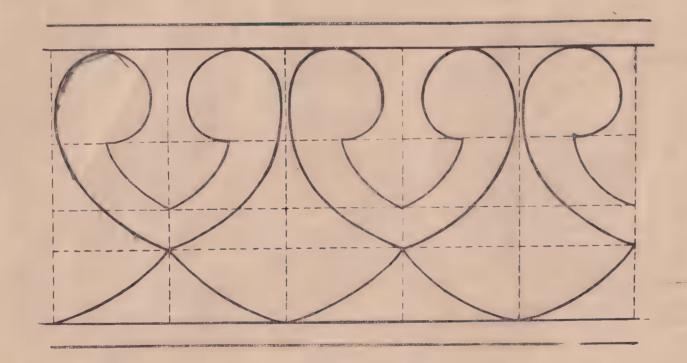


एक चौकोर कोठा बनाकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से फूल की शक्क बनात्रों, गोलाई हाथ से बनात्रों।

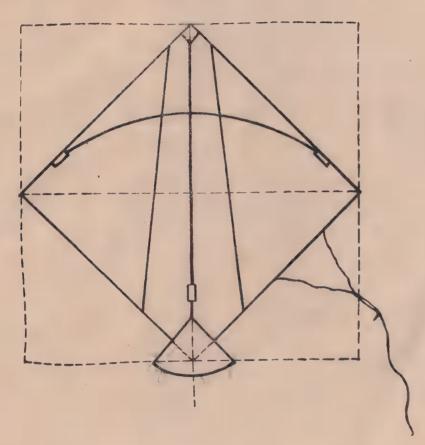
ا يك يوكوركونها بناكرنقطه دارلائنول كى مدد سے بھول كى شكل بناؤگولائى باتھ سے بناؤ



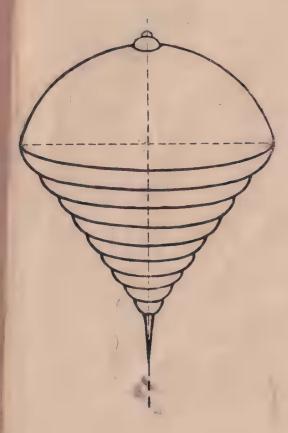
नुक़तेदार लकीरों की मदद से किनारों की राक्क बनाश्रो व हाथ से गोलाई देकर शक्क नमूने माफिक़ पूरी करो। نقطه دارلگیرول کی مدد سے کناروں شکل بناؤ و ہا تھ سے گولائی دے گرشکل نمونہ کے موافق پوری کرو-



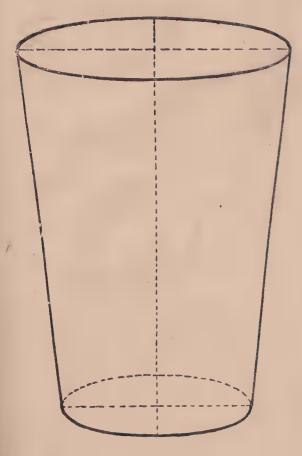
चौकोर कोठा बनाकर बीच की नुक़तेदार लाइनों की मदद से पतंग की शक्क बनाओ। چۇركوشابناكرىيىكى نقطەدارلائوسىكى مددسىينىگ كىشكل بناۋ-



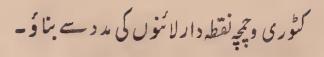
लटू की शक्क नुक्तदार लाइनें खींचकर नमूने के माफिक गोलाई हाथ से देकर शक्क पूरी करो। لو کی شکل نقطہ دار لائیں کی کرنمو نہ کے موافق گولائ ہاتھ سے دے کرشکل بوری کرو

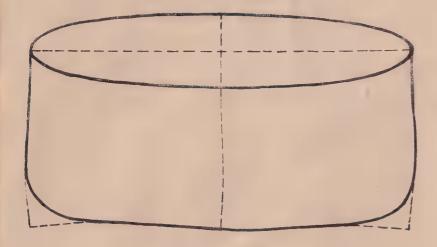


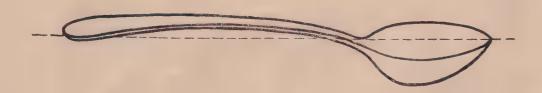
गिलास की शक्क नुक़तेदार लाइनें खींचकर नमूने के माफिक गोलाई बनाकर शक्क पूरी करो।



كل سى كَشْكِل نقطه دار لائنس كَيْنِ كرنمونه كے موافق كُولائي بناكرشكل يورى كرو-

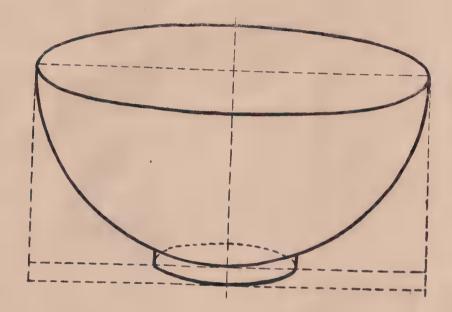




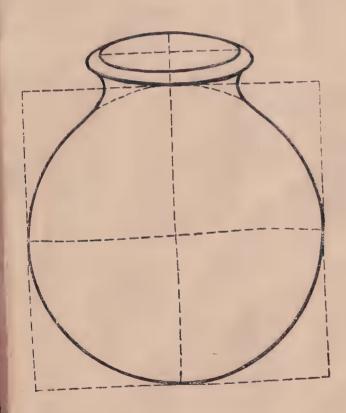


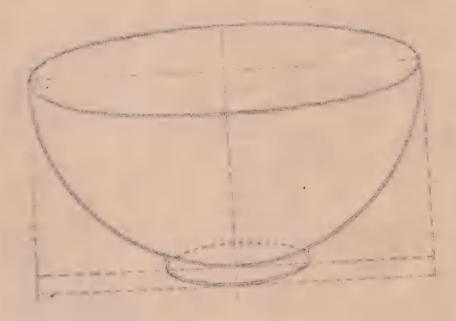
प्याले की शक्त हाथ से गोलाई देकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से पूरी करो।

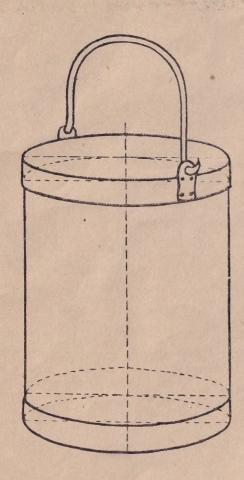
پیالے کی شکل ہاتھ سے گولائی دے کرنقط دارلائنوں کی مدد سے پوری کرو۔

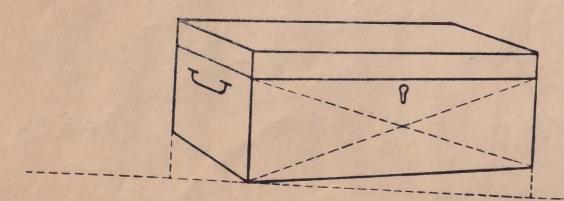


नुकतेदार लाइनों की मदद से हाथ से गोला बनाकर नमूने के माफिक शक्क पूरी करों।



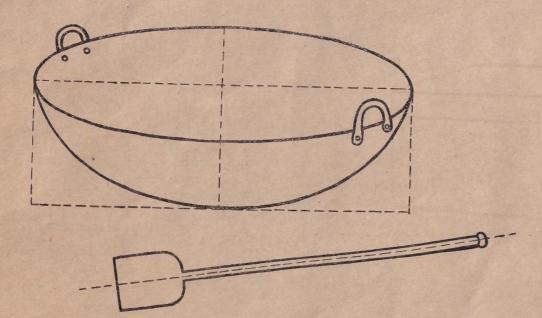






कढ़ाई व कौंचा नुक़तेदार लाइनों की मदद से गोलाई देकर पूरी करो।

15 کواہی وکونچ نقطہ دارلائنوں کی مدد سے گولائی دے کر پوری کرد-



पीपल, बड़ व नीम के पत्तों की शक्लें हाथ से बनाने की कोशिश करो।

بیل وبڑا درنیم کے پتوں کی شکیں ہاتھ سے بنانے کی کوشش کرو۔



